[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

Aeronautics. The court however ruled that it was not competent to go into the charges and neither did it have the required expertise."

कोर्ट का फैसला ठीक है । लेकिन अगर डिफैंस और रिसर्च में काम करने वाले हमारे वैज्ञानिकों को लगता है कि उन्हें अनुसंधान करने से रोका जा रहा है, तो यह बड़ा दुर्भाग्य पूर्ण है अभी तक हमें एण्टी-टैंक-मिसाइल नहीं बना सके हैं, क्यों नहीं बना सके हैं, इसकी चर्चा 1960 से चल रही है, बीच में दावा किया गया था कि मिसाइल बन गया, लेकिन पता लगा कि नहीं बना है । हम हवाई जहाज खरीदना चाहते हैं, लड़ाकू हवाई जहाज खरीदना चाहते हैं, कौन से जहाज खरीदें—इस पर बहस हो रही है । लेकिन हम अपने देश में इस तरह के जहाज क्यों नहीं बना सकते, अब तक क्यों नहीं बना पाये ? रिसर्च एण्ड डवेलपमेंट विंग में जिस तरह से काम होना चाहिए, कहीं ऐसा तो नहीं है कि उस तरह काम नहीं हो रहा है ? कहीं हमारे तरुण वैज्ञानिक निराश तो नहीं हो रहे हैं ? कहीं ऐसे अफसर तो नहीं बैठे हैं जो विदेशों से सामान खरीदना चाहते हैं, क्योंकि बड़े पैमाने पर रक्षा सामग्री खरीदने में उन के निहित स्वार्थ रहते हैं ? इन सब बातों की जांच होनी जरूरी है ।

अभी हम टैंक खरीदने जा रहे हैं । विजयंत टैंक जब हम ने बनाया था, उस की बहुत प्रशंसा हुई थी, उस से हम कितना आगे बढ़े हैं, अगर नहीं बढ़े हैं तो क्यों आगे नहीं बढ़ रहे हैं ? फौज पर रुपया खर्च करने में यह सदन कभी कोताही नहीं करेगा, लेकिन फौज की शक्ति संख्या में नहीं है, उस की प्रभावशालिता में है और उस की वह प्रभावशालिता बढ़नी चाहिये —जमीन पर, आसमान में और समुद्र में । इस पर विचार करते हुए हम यह भी सोचें कि खतरा कहां से है और खतरे का किस तरह से सामना किया जा सकता है ।

मगर मुझे अफसोस है, सभापति महोदय, एक बात कह कर मैं खत्म कर दूंगा । वाद-विवाद हो रहा है और प्रधान मंत्री जी सदन में बैठी हुई हैं, उन को बैठना पड़ रहा है, अगर कोई रक्षा मंत्री होता तो शायद वह अपना समय कुछ और महत्वपूर्ण कामों में लगा सकती थीं । 6 महीने हो गये इस देश का कोई रक्षा मंत्री नहीं है ... मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूं कि कांग्रेस (आई) के पास कोई ऐसा सदस्य नहीं है, जो डिफेन्स मिनिस्टर बन सके । मगर अभी तक रक्षा मंत्री नहीं है, पूरा समय दे कर काम करने वाला रक्षा मंत्री नहीं है ।

मुझ से एक गलती हो गई थी—नरसिंह राव जी यहां बैठे हुए हैं, इस लिए मैं उस का स्पष्टीकरण कर दूं । मैं चुनाव सभा में भाषण देने के लिए उदयपुर गया था । वहां पर मैंने यही मुद्दा उठाया था—मैंने कहा था कि अगर प्रधान मंत्री जी चाहें तो सुखाड़िया जी को रक्षा मंत्री बना सकती हैं । किसी समाचार समिति ने रिपोर्ट दी कि वाजपेयी ने कहा है कि नरसिंह राव को हटा देना चाहिए और सुखाड़िया जी को विदेश मंत्री बना देना चाहिए । मैंने उस का खण्डन किया तो किसी ने छापा नहीं । विदेश मंत्री जी जरूर मुझ से नाराज होंगे, लेकिन मैं चाहता हूं कि देश के पास पूरा समय दे कर काम करने वाला रक्षा मंत्री होना चाहिए । प्रधान मंत्री जी ऊपर से देख भाल करें ... (व्यवधान) ... वे तो सारे मंत्रालयों की देख-रेख कर रही हैं । मगर यह पार्ट-टाइम काम नहीं है और देश की रक्षा की समस्याओं को पार्ट-टाइम आधार पर हल नहीं किया जा सकता है ।

14.v3 hrs.

STATEMENT *RE.* LAUNCHING OF SLV-3

MR. CHAIRMAN: The Hon. Prime Minister wants to make a statement.

THE PRIME MINISTER (SHRIMATI INDIRA GANDHI): Sir, I want to share some good news with you and the hon. Members.

I have pleasure in informing the House that the first successful launch of the Indian Satellite Launch Vehicle SLV-3 took place this morning at 8.03.45 hours from Srihariketa Range. The Launch Vehicle placed a 35 kg. India Satellite Rohini RS-I in orbit around the earth. The Satellite will orbit the earth approximately once every 90 minutes. SHAR will see two orbits for the first time tonight. Thereafter every twelve hours two more such orbits will be seen over SHAR in regular periodicity.

The four-stage all solid-propellant vehicle has been developed in India by Indian scientists and Engineers. The total development cost of the SLV-3 Vehicle is about Rs. 20 crores and the present experimental launch has cost about Rs. 1 crore. The Rohini satellite in orbit is intended mainly to measure the performance parameters of the Vehicle and is being tracked by our National Tracking network. Initial indications are

that the Vehicle and Satellite function satisfactorily.

The collection of tracking data and the analysis are continuing..

This is a notable achievement for India and for Indian Science. I am sure the House will join me in congratulating our scientists and technicians of the Department of Space. The nation is proud of them and wishes them further successes.. (*Interruptions*)

वाजपेयी जी ने सायंस की बात कही थी, इस लिये मैंने उचित समझा कि इसके बारे में इसी समय कह दूं।

14.15 hrs.

DEMANDS FOR GRANTS (GENERAL), 1980-81—*Contd.*

MINISTRY OF DEFENCE—*Contd.*

श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी (खजुराहो) : सभापति महोदय, सब से पहले मैं आप को धन्यवाद देती हूं कि आप ने रक्षा मंत्रालय की अनुदानों पर, जो बहुत ही महत्वपूर्ण हमारा मंत्रालय है, मुझे बोलने का मौका दिया है और उस के लिए मैं आप की आभारी हूं। निःसंदेह इन अनुदान का समर्थन करने के लिए मैं खड़ी हुई हूं।

सभापति महोदय, आपको ज्ञात है कि हमारे वीर सैनिकों ने, हमारी सेना ने हमारे देश में जो ज्वलंत कीर्तिमान स्थापित किए है, उन से हम लोग निःसंदेह परिचित हैं चाहे वह पाकिस्तान की लड़ाई रही हो, चाहे सरगोधा में हवाई-अड्डे को उड़ाने की बात रही हो, चाहे अमेरिका से भेजे गए पैटन टैंकों कोध्वस्त करने की बात रही हो और चाहे बंगला देश की आजादी की लड़ाई रही हो, उन्होंने हमारे देश का जो मस्तक ऊंचा किया है, उस के लिए हम उन वीर सैनिकों के आभारी हैं और उन को कोटिशः धन्यवाद देते हैं। आज भी हमारे वे वीर सैनिक, जब शान्ति का समय है, तो भी चाहे हिमालय की ऊंची बर्फीली चोटियां हैं, चाहे समुद्र की गहरी तल हो, चाहे रेगिस्तान की उबलती हुई बालू हो और चाहे गगन का विशाल आंचल हो, आज भी अपने देश की आजादी के लिए वे सतर्क रहते हैं सावधान रहते हैं और हमेशा चिन्तित रहते हैं, और उस जन्मभूमि की रक्षा के लिए जिस जन्मभूमि के लिए हमारे यहां के ऋषियों ने यह कहा है :

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"

हमारी जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़ कर है और उस की रक्षा के लिए वे हमेशा तत्पर रहते हैं। ऐसे हमारे सैनिकों का बल बढ़ाने के लिए, उन की शक्ति बढ़ाने के लिये उन का आत्मबल बढ़ाने के लिए, यह जरूरी हो जाता है कि आज के युग को देखते हुए, हमारे पड़ौस में जो मुल्क हैं, हमारे जो नजदीक के मुल्क हैं उन में जिस तरह की गतिविधियां हो रही हैं, उन सबको देखते हुए यह बहुत जरूरी हो जाता है कि हम अपने सैनिकों के हाथों में आधुनिकतम से आधुनिकतम अस्त्र दें, आधुनिक से आधुनिक साधन हम उन को मुहैय्या करें ताकि उन की शक्ति बढ़े, उन का आत्मविश्वास बढ़े। आज मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं होता है, वाजपेयी जी पता नहीं किस वजह से कहते है कि आज कोई एटम बम या परमाणु बम बनाने का कोई मतहत्व नहीं है। मैं कहती हूं कि यह बहुत जरूरी है कि हम अपनी अणु शक्ति और परमाणु शक्ति को बढ़ायें। इसलिए नहीं कि हम दूसरों पर हमला करने जा रहे हैं बल्कि अपनी आत्म-रक्षा के लिए, हमारे पड़ौसी देश जो हथियार अमेरिका से मांग रहे हैं और अपनी शक्ति बढ़ाते जा रहे हैं अगर हमें अपने देश की आजादी को कायम रखना है हमें अपने देश को मजबूत बनाना है, तो हमें अणु शक्ति और परमाणु शक्ति का उपयोग करना होगा। हमें रचनात्मक कार्यों में भी इन का उपयोग करना होगा। आज हमारे देश की आजादी के लिए यह बहुत जरूरी है कि हम परमाणु बम बनाएं, हम परमाणु शक्ति को बढ़ायें। बाजपेयी जी कह रहे थे कि हम अपने वैज्ञानिकों की उपेक्षा करते हैं। बाजपेयी जी मुझे माफ करेंगे कि इन की उपेक्षा तो आज की जनता सरकार के जमाने में हुई। हम ने तो उन को आगे बढ़ाया है। उस की मिसाल आप के सामने मुझ से पहले बोल कर हमारी प्रधान मंत्री जी ने जो सदन को एस० एल० वी०-3 और रोहिणी नामक सेटलाईट की सफलता के बारे में कीर्तिमान को आपके सामने प्रस्तुत किया है। हम अपने उन वैज्ञानिकों के आभारी हैं।

सभापति महोदय, आपके समक्ष कल हमारे संसद सदस्य माननीय गाडगिल जी ने एक बात बताई थी कि हमारे भूतपूर्व प्रधान मंत्री जी ने अणु बम न बनाने के लिए कुछ घोषणा की थी। वह किस डर से की थी और किस दबाव की वजह से की थी, मैं नहीं कह सकती-मगर मुझे उस पर कोई आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि वे कब क्या बोल जायें, कहा नहीं जा सकता यह मैं जानती हूं। हमारे वाजपेयी जी बैठे हुए हैं और उन को पता है कि एक बार महिलाओं के खिलाफ वे क्या क्या बोल गये और फिर माफी मांगते फिरे थे। जब उन्होंने यह घोषणा की तो मैं यह बात नहीं कहती पर आम जनता में तरह तरह की बातें कही जाती थीं। कुछ लोग कहते थे कि यह उन का तकाजा है और कुछ कहते थे कि यह खानपान की बात है, जिस से बुद्धि-विवेक काम नहीं करता। मैं नहीं जानती कि उन का खानपान क्या है। मुझे आयुर्वेद की जानकारी है, मैंने उसे पढ़ा है। हमारे आयुर्वेद में तीन तरह के खान-पान हैं—एक सात्विक, दूसरा राजसी और तीसरा तामसिक। तामसिक भोजन में कुछ ऐसे पदार्थ होते हैं जो कि शरीर के लिए तो उपयोगी हो सकते हैं लेकिन बुद्धि और विवेक के लिए उपयोगी नहीं होते हैं। उन्होंने जो यह बात कही है कि हमें अणु बम नहीं बनाना चाहिए। वह मुझे भी नहीं जमी और हमारे सदन के लोगों को भी नहीं जमी है। हमें अणु शक्ति और परमाणु शक्ति को बढ़ाना होगा। इस को बढ़ाने के लिए यह भी जरूरी है कि हम दूसरे मुल्कों पर भी इस के बारे में दृष्टि रखें।